

पंचवर्षीय योजना

सातवीं योजना की अवधि 1985-86 से 1889-90 तक थी। छठी योजना में लगभग 656 करोड़ रु० की राशि व्यय हुई। सातवीं योजना में 1338 करोड़ रुपए के परिव्यय का प्रावधान रखा गया है।

(1) सातवीं योजना के उद्देश्य : हिमाचल प्रदेश की सातवीं योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

- (i) खाद्यान्न के उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि, लाभदायक रोजगार व अवसरों में वृद्धि तथा उत्पादकता को बढ़ावा।
- (ii) गरीबी को दूर करना, अन्तर्जातीय, अन्तर्क्षेत्रीय तथा गांव व शहरों के बीच विषमताओं को कम करना।
- (iii) औद्योगिक उत्पादन के विकास की ऊंची दर जिसे कार्यकुशलता में वृद्धि, चालू परियोजनाओं की पूरी करके तथा आधुनिकीकरण द्वारा प्राप्त किया जायेगा।
- (iv) विकास की योजना की मुख्य धारा में विज्ञान व तकनीकी को शामिल करना।
- (v) सामान्यतः लोगों के रहन-सहन में गुणात्मक सुधार लाना तथा विशेष रूप से आर्थिक व सामाजिक तौर पर पिछड़े लोगों की दशा में निम्नतम आवश्यकता कार्यक्रम के माध्यम से उनके स्वास्थ्य की देखभाल, जन्म दर में कमी, साफ पेयजल की आपूर्ति, स्वच्छता व आवास जैसे मामलों में सुधार करना।
- (vi) अर्थव्यवस्था की सहायक संरचनाओं के मार्ग में आई रुकावटों को दूर करना तथा विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित क्षमता के उपयोग में सुधार लाकर उत्पादकता में वृद्धि करना।
- (vii) जनसंख्या की वृद्धि की दर को कम करना तथा छोटे परिवार के महत्व को समझाना। ऐसा साक्षरता में वृद्धि, लोगों में जागरूकता, जानकारी व प्रोत्साहन जैसे उपाय अपनाकर करना। साथ ही आर्थिक व सामाजिक गतिविधियों में महिलाओं की सकारात्मक भूमिका को महत्व देना।
- (viii) ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का तेजी से विकास तथा गैर परम्परागत साधनों का विकास करना।
- (ix) विकास के अल्पकालीन व दीर्घकालीन लक्ष्यों में सामान्यता लाना।
- (x) आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।

(2) पृष्ठ भूमि : आर्थिक विकास के कार्यक्रम को बनाने से पहले गरीबी की सीमा तथा बेरोजगारी की सीमा का अनुमान लगाना आवश्यक समझा गया ताकि तदनुसार कार्यक्रम तैयार किया जा सके।

(अ) गरीबी की रेखा के नीचे के ग्रामीण परिवार

1. 1981 की जनगणना के अनुसार कुल परिवार	(लाखों में)	7.06
2. गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले परिवार	„	3.04
3. समन्वित ग्रामीण विकास से लाभान्वित परिवार	„	2.40
4. गरीबी की रेखा को पार करने वाले परिवार	„	0.96
5. सातवीं योजना के प्रारम्भ में गरीबी की रेखा के नीचे के परिवार	„	2.08
6. गरीबी की रेखा के नीचे के परिवारों का प्रतिशत	„	29.5

स्रोत : सातवीं पंचवर्षीय योजना का प्रारूप-पेज 34

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सातवीं योजना के प्रारम्भ में 2.08 लाख परिवार गरीबी की रेखा के नीचे रह रहे थे। ये कुल परिवारों के 29.5 प्रतिशत थे। समस्त भारत में यह प्रतिशत 37 था। 1995 तक गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले (समस्त भारत व हिमाचल में) 10 प्रतिशत परिवार रह जायेंगे।

(ब) बेरोज़गारी के अनुपात : 1983 में किये गये राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के 38वें चक्र के परिणामों से ज्ञात होता है कि 1983 में हिमाचल में श्रम शक्ति का अनुमान 19.4 लाख व्यक्ति था। जिसमें से 17.84 लाख ग्रामीण थे वे 1.37 लाख शहरी थे। सातवीं योजना के आरम्भ में 0.79 लाख मानव वर्ष के लिए रोज़गार के अवसर जुटाने थे।

(3) रणनीति : उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि हिमाचल प्रदेश में विकास की रणनीति मूलतः ग्राम आधारित होगी जिसका मुख्य उद्देश्य गांवों में बड़ी मात्रा में रोज़गार के अवसर पैदा करना होगा। इसे प्राप्त करने के लिए हमें निम्न कदम उठाने होंगे।

(i) पहले की अपेक्षा विकास की अधिक दर प्राप्त करनी होगी।

(ii) कृषि क्षेत्र में विकास की दर ऊंची करनी होगी।

(iii) गरीबी दूर करने के उपायों (समन्वित ग्रामीण विकास, ट्राइमस, एन.आर.ई.पी. आदि) पर अधिक जोर देना।

(iv) बीस सूत्रीय कार्यक्रम पर अधिक जोर देना।

(v) सामाजिक व आर्थिक सहायक संरचना के विकास पर अधिक बल।

(vi) लघु किसान, सीमान्त किसान, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति जैसे कमजोर वर्ग के आर्थिक उत्पादन के प्रयासों को तेज़ करना।

(vii) लोगों की आय में असमानता व क्षेत्रीय विषमता को कम करना।

(4) सातवीं योजना के कार्यक्रम

(i) विकास की दर : सातवीं योजना में विकास की दर 6 प्रतिशत रखी गई। विभिन्न क्षेत्रों की विकास दर तालिका में दी गई है।

क्षेत्रानुसार विकास दर

क्र० सं०	क्षेत्रों के नाम	प्रतिशत विकास दर
1.	कृषि	4.50
2.	खनन व उद्योग	10.00
3.	निर्माण	10.00
4.	विद्युत	15.00
5.	परिवहन	5.00
6.	शेष	5.00
7.	कुल	6.00

स्रोत : सातवीं योजना का प्रारूप-पेज 37

(ii) कृषि : हिमाचल के 70 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर हैं परन्तु अभी तक हम खाद्यान्नों में आत्मर्भर नहीं हो सके। विशेषज्ञों के अनुसार 1990 तक हमें 16.31 लाख टन खाद्यान्नों की आवश्यकता

थी अतः कृषि को पहले भी तेज़ गति से बढ़ाने की आवश्यकता है। ऐसा अधिक उपज देने वाले बीजों के क्षेत्र में विस्तार करके, और उर्वरकों का अधिक प्रयोग करके ही हासिल किया जा सकता है। सातवीं योजना में प्रतिवर्ष 4.5 प्रतिशत की दर से विकास कर हम 15.9 लाख अनाज ही पैदा कर सकते हैं। अतः आत्म-निर्भरता प्राप्त नहीं हो सकेगी और हमें लगभग 0.50 लाख टन अनाज केन्द्रीय भण्डार से प्राप्त करना होगा। सातवीं योजना में आलू 1.6 लाख टन, सब्जियां 3.5 लाख टन व तिलहन में 18 हजार मी० टन उत्पादन का लक्ष्य रखा है।

(iii) **खनन व उद्योग** : सातवीं योजना की अवधि में औद्योगिक विकास की दर गति को पकड़ सकने का अनुमान है क्योंकि सारे राज्य को केन्द्रीय सरकार ने उद्योग के लिए पिछड़ा क्षेत्र घोषित किया है। अतः राज्य में खनन व उद्योगों के क्षेत्र में 10 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर के विकास का लक्ष्य रखा गया है। केन्द्रीय सरकार से उदार अनुदान मिल सकने के कारण बड़ी व मध्यम इकाइयां पहले से अधिक स्थापित होंगी।

(iv) **निर्माण** : सातवीं योजना में शक्ति, मध्यम आकार की सिंचाई व जल परियोजनाएं, परिवहन आदि में व्यापक स्तर पर निर्माण कार्य को देखते हुए इस योजना अवधि में 10 प्रतिशत की विकास दर का लक्ष्य रखा गया है।

(v) **बिजली** : ऊर्जा व शक्ति को इस योजना में सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। इस अवधि में रोंगटोंग, बिनवा, भावा व आन्ध्रा परियोजनाएं पूरी हो जायेंगी। परिणामस्वरूप स्थापित क्षमता में 2.93 लाख कि०वा० की वृद्धि होगी। इसके साथ ही बिजली को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने व उसका उपभोक्ताओं में वितरण करने से ऊर्जा का ह्रास होता है। इसे यथासंभव कम करना है। छठी योजना के पहले तीन वर्षों में वृद्धि की दर 20 प्रतिशत रही थी। अतः सातवीं योजना में बिजली के क्षेत्र में विकास दर 15 प्रतिशत रखी गई है।

(vi) **परिवहन** : परिवहन के क्षेत्र में विकास की दर 5 प्रतिशत रखी गई है। इस क्षेत्र में 1370 कि०मी० सड़कों की सोलिंग की जाएगी। 1370 कि०मी० लम्बी सड़कों को तारकोल बिछा कर पक्का किया जाएगा तथा 2740 कि०मी० एक लेन वाली सड़कों का निर्माण किया जाएगा। 238 बड़े व 86 छोटे पुल बनाये जाएंगे।

(5) परिव्यय

छठी पंचवर्षीय योजना का स्वीकृत परिव्यय 560 करोड़ रुपए था। जबकि वास्तव में 655 करोड़ रुपए खर्च हुए। इस प्रकार परिव्यय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सातवीं योजना के लिए 1338 करोड़ रुपए का परिव्यय स्वीकृत हुआ। इसका क्षेत्रानुसार वर्गीकरण निम्न तालिका में दिया गया है।

क्षेत्रानुसार परिव्यय (करोड़ रु० में)

क्र० सं०	क्षेत्रों के नाम	परिव्यय की राशि
1.	कृषि	193.00
2.	ग्रामीण विकास	58.85
3.	सहकारिता	10.00
4.	सिंचाई व बाढ़ नियन्त्रण	124.95
5.	शक्ति	309.75

क्षेत्रानुसार परिव्यय (करोड़ रु० में)

क्र० सं०	क्षेत्रों के नाम	परिव्यय की राशि
6.	उद्योग व खनन	38.25
7.	परिवहन	245.45
8.	वैज्ञानिक सेवायें	1.90
9.	आर्थिक सेवायें	1.65
10.	सामान्य सेवायें	56.90
11.	सामाजिक व सामुदायिक सेवायें	297.50
	कुल योग	1338.20 (लगभग)

स्रोत : सातवां योजना की रूपरेखा-पेज 109

सातवीं योजना में सर्वोच्च प्राथमिकता शक्ति को दी गई है। इसके बाद सामाजिक व सामुदायिक सेवायें परिवहन, कृषि, सिंचाई व बाढ़ नियन्त्रण आदि को दे दी गई है।

उपरोक्त परिव्यय में से 11 प्रतिशत राशि अनुसूचित जाति के कम्पोनेट प्लान व 9 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के विकास के लिए अलग से रखी गई है। इनकी अलग योजना तैयार की जाती है। यह राशि अन्य मद में खर्च नहीं की जा सकती।

जन-जातीय उप-योजना

चौथी योजना तक जन-जातीय क्षेत्रों का विकास तदर्थ आधार पर होता था। पांचवीं योजना से हिमाचल में जन-जातीय क्षेत्रों के लिए उप-योजनाएं तैयार की गईं। हिमाचल प्रदेश में जन-जातीय क्षेत्रों में सम्पूर्ण किन्नौर व लाहौल-स्पिति जिले तथा चम्बा के पांगी व भरमौर के क्षेत्र शामिल हैं। ये सभी इलाके बहुत दूर दराज स्थित हैं व दुर्गम भी हैं। ये सभी इलाके सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 42.5 प्रतिशत भाग है। इसके विपरीत जनसंख्या का केवल 3.13 प्रतिशत भाग वहां निवास करता है। इस भू-भाग की आबादी का 8 प्रतिशत जनसंख्या जन-जातीय है। ये लोग दूर-दूर बिखरे गांवों में रहते हैं।

परिव्यय : पांचवीं पंचवर्षीय योजना में राज्य सरकार एवं विशेष केन्द्रीय सहायता को मिलाकर 9.12 करोड़ रुपए का परिव्यय रखा गया जो कुल व्यय का 8.6 प्रतिशत था। इस उपयोजना की राशि को कहीं अन्यत्र प्रयोग नहीं किया जा सकता और न ही राशि प्रयोग न होने पर समाप्त होती है। शेष राशि अगले वर्ष खर्च की जा सकती है। सातवीं योजना में 107 करोड़ से भी कुछ अधिक राशि खर्च करने का प्रावधान था जो कुल व्यय का 9.00 प्रतिशत था।

विकास की रणनीति में बिखरी व केन्द्रित आबादी के विकास को लिया गया। सबसे पहले उन जन-जातीय क्षेत्रों के विकास पर बल दिया जाएगा जहां लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या केन्द्रित है। हिमाचल प्रदेश में चम्बा जिले में ऐसे दो क्षेत्रों की पहचान की गई है। कृषि, बागवानी, भू-संरक्षण, मछली पालन, पशु पालन व शिक्षा के विकास को प्राथमिकता दी गई है। सहायक संरचनाओं के क्षेत्र में लघु सिंचाई, सहकारिता, सजक व भूमि सुधारों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

अनुसूचित जाति के लिए कम्पोनेट योजना

आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य सामाजिक न्याय के साथ विकास था। परन्तु गत तीन दशकों में विकास का लाभ समाज के कमजोर वर्ग को बहुत कम मिला। उनमें से अधिकांश आज भी गरीबी की रेखा के नीचे जीते हैं। यह वर्ग आर्थिक शोषण व सामाजिक भेदभाव का शिकार रहा है। 1981 की जनगणना के अनुसार हिमाचल प्रदेश में 10.4 लाख लोग अनुसूचित जाति के थे जो कुल आबादी का 24.6 प्रतिशत भाग था। इनमें से 95 प्रतिशत गांवों में रहते हैं। 1981-92 में निर्णय लिया गया कि योजना व्यय का 11 प्रतिशत अनुसूचित जाति के विशेष कम्पोनेट योजना पर व्यय किया जाए। छठी योजना में 62.5 करोड़ रुपए का परिव्यय निर्धारित किया गया था। सातवीं योजना में (1985-90) लगभग 147 करोड़ रुपए का परिव्यय का प्रावधान रखा गया। यह राज्य योजना का अंग था। इसके अलावा विशेष केन्द्रीय सहायता के अधीन छठी योजना में 4.5 करोड़ रुपए व सातवीं योजना में लगभग 10 करोड़ रुपए का परिव्यय रखा गया।

इसके अधीन विकास की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

- (1) कृषि, बागवानी, पशुपालन पर 50 प्रतिशत सहायता अनुदान देना। उर्वरकों पर 40 प्रतिशत अनुदान।
- (2) अनुसूचित जाति की सभी कन्या छात्राओं को (छठी कक्षा व आगे) 30 रु० मासिक छात्रवृत्ति व 100/- प्रति छात्र को पुस्तकें व वस्त्र खरीदने को प्रारम्भिक देय राशि।
- (3) अनुसूचित जाति के लोगों के घरों में बिजली पहुंचाना।
- (4) इन लोगों की बस्तियों में विद्यालय व स्वास्थ्य संस्थाएं उसी अनुपात में खोलना।
- (5) प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को 5 रु० प्रति मास की छात्रवृत्ति देना।
- (6) डॉक्टरी शिक्षा में प्रवेश चाहने वालों को कोचिंग देने के विशेष प्रबन्ध।
- (7) मानव गन्द को उठाने व साफ करने से बचाने के लिए अच्छे शौचालयों का निर्माण।
- (8) मकान रहित गरीबों को एक कमरा का बना हुआ मकान देना।
- (9) इन लोगों को चरणबद्ध तरीके से सड़कों से जोड़ना।

इनके अलावा मुफ्त कानूनी सहायता, निजी उद्यम के लिए 4 प्रतिशत ब्याज पर उधार, काम चलाने के लिए पूंजी उपलब्ध कराना आदि उपाय भी अपनाये गये हैं।

आठवीं योजना

(वार्षिक उप योजना-1990-91 व 1991-92)

वित्तीय प्रावधान : आठवीं योजना के अधीन एक-एक वर्षीय योजना पूर्ण हो चुकी है एवं दूसरी एक-वर्षीय उप योजना चालू है।

	1990-91	1991-92
राशि करोड़ रु० में	32.4	36.9

वर्ष 1990-91 में 32.4 करोड़ रुपए की योजना राशि स्वीकृत हुई थी। 1991-92 के लिए 36.9 करोड़ रु० की राशि का निर्धारण हुआ है।

विकास रणनीति के अधीन कृषि, परिवहन व ऊर्जा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।

कृषि : वर्ष 1990-91 में कृषि के लिए 5.6 करोड़ रु० की राशि रखी गई थी जबकि 1991-92 की उपयोजना में 8.2 करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान रखा गया है।

1985-86 की कृषि गणना के अनुसार, प्रति व्यक्ति जोत का औसत आकार 1.29 हैक्टेयर था। सम्पूर्ण क्षेत्र को केवल 4.7 प्रतिशत क्षेत्र कृषि योग्य है जबकि वास्तव में कृषि 3.5 प्रतिशत भूमि पर ही की जाती है। यह क्षेत्र नकदी की फसलें जैसे आलू, सब्जियों के बीज तथा औषधी गुणयुक्त जड़ी बूटियां पैदा करने के लिए अधिक अच्छा है। इसके साथ ही खाद्यान्न, दालें व तिलहन की पैदावार बढ़ाने के प्रयास किये जाएंगे। 1991-92 में 450 हैक्टेयर में सब्जियां लगाने व 4500 मी० टन उत्पादन का लक्ष्य रखा है।

बागवानी के अधीन 1973-74 में क्षेत्र 1787 हैक्टेयर था जबकि 1990-91 में यह बढ़कर 7681 हैक्टेयर हो गया। आठवीं योजना में यह बढ़कर 9681 हो जाएगा। इस अवधि में उत्पादन 4000 टन से बढ़कर लगभग 14000 टन हो गया। 1991-92 में 600 टन वृद्धि का लक्ष्य रखा गया है। सम्पूर्ण आठवीं योजना में उत्पादन 17 हजार टन का लक्ष्य रखा गया है।

हाप्स की खेती को उच्च प्राथमिकता दी जा रही है। इसका उत्पादन 1975-76 में शुरू किया गया था। आठवीं योजना में 100 हैक्टेयर में हाप्स की खेती का लक्ष्य रखा गया है। जबकि उत्पादन का लक्ष्य 70 मी० टन रखा गया है। 1990-91 में 12 मी० टन का लक्ष्य रखा गया है।

इसके साथ ही शीतोष्ण कटिबन्धीय फूलों के उत्पादन को भी उच्च प्राथमिकता दी गई है। पशुपालन में गाय व कुक्कट विकास पर बल दिया जा रहा है। किन्नौर में याक प्रजनन पर बल दिया जा रहा है। वानिकी में चिलगोजा, जंगली खुमानी व बादाम के जंगली वृक्षों का विकास किया जाएगा।

जल विद्युत : इस भाग के अधिकांश क्षेत्र वर्ष में 3-6 माह तक बर्फ से ढके होने से शेष भाग से कटे होते हैं। तब वायु सेवा ही एकमात्र साधन रह जाता है। जन जातीय विकास कैल व किलर के लिए हैलीकाप्टर सेवा चलाता है। अब पर्यटन विकास विभाग भी हैलीपैड तैयार कर रहा है। ताकि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके। 1990-91 में परिवहन पर 7.6 करोड़ रु० तथा 1991-92 में 5-6 करोड़ रु० व्यय का प्रावधान रखा गया है। इस क्षेत्र में कुल 12.3 कि०मी० लम्बी सड़कें हैं तथा सड़कों का घनत्व प्रति 100 वर्ग कि०मी० में 5.2 कि०मी० है। प्रति वर्ष में 18 कि०मी० सिनाल लेन व 6 कि०मी० लम्बी जीप योग्य बनाई जाएगी तथा 5 कि०मी० लम्बे रोप व (तार मार्ग) बनाया जाएगा।

अभ्यास-प्रश्न

(अ) निबन्धात्मक प्रश्न

- हिमाचल प्रदेश की सातवीं पंचवर्षीय योजना के क्या उद्देश्य हैं ? योजना की पृष्ठ भूमि व रणनीति पर प्रकाश डालिये।
- सातवीं योजना के कार्यक्रम का सविस्तार वर्णन कीजिए।
- सातवीं योजना के क्षेत्रानुसार परिव्यय का वर्णन करते हुए प्राथमिकताओं का उल्लेख कीजिए।

(ब) लघु उत्तर प्रश्न

- गरीबी की रेखा के नीचे के परिवारों का अनुमान बताओ।
- जन जातीय उप योजनाओं का परिव्यय बताओ।
- अनुसूचित जाति योजना की रणनीति स्पष्ट करो।

(iv) सातवीं योजना में बिजली के विकास पर एक नोट लिखो।

(स) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो

- (i) अनुसूचित जन जाति की संख्या हिमाचल प्रदेश की कुल जनसंख्या की प्रतिशत है।
- (ii) सातवीं योजना में गरीबी की रेखा के नीचे प्रतिशत परिवार थे।
- (iii) सातवीं योजना में मानव वर्ष के बराबर रोजगार के अवसर जुटाने थे।
- (iv) सातवीं योजना में समस्त विकास की दर प्रतिशत निर्धारित की गई है।
- (v) सातवीं योजना का परिव्यय करोड़ रु० था।

सही (✓) व गलत (×) के चिन्ह लगाओ।

- (i) पहली पंचवर्षीय योजना 1948 में शुरू हुई।
- (ii) 1995 तक गरीबी की रेखा के नीचे 10 प्रतिशत परिवार रह जाएंगे।
- (iii) अनुसूचित जाति की जनसंख्या लगभग 25 प्रतिशत है।
- (iv) सातवीं योजना में खाद्यान्न उपादन का लक्ष्य 15.9 लाख टन रखा गया था।
- (v) छठी योजना पर 655 करोड़ रुपया व्यय हुआ।



A LIST OF REFERENCE ARTICLES

1. Forest : Forest Development for Ecology, Fuel, Fodder and Industry. Author-Sh. Devi Singh, Former Minister-Forest.
2. Minerals : Minerals Resources for development of H.P. Sh. Subhash Sharma, State Geologist, Ind. Dept. H.P.
3. Education : Eradication of illiteracy and improvement in Quality of Edu. By Sh. Sant Ram, Former Minister-Education.
4. Health : Health & family welfare.
Dr. J.C. Sharma, Director of Health and family planning, H.P.
5. Transport : Roads-Foremost infrastructure Facilities for Eco. Growth in Rural Areas of H.P. Sh. Sukh Ram Former Minister-P.W.D.
6. Electricity : Electricity Board its creations, Achievements, on going Activities & Role of Hydel Power of H.P. Sh. S.L. Duggal-Chief Engineer H.P.S.E.B.
7. Irrigation : Irrigation for Production Sh. M.L. Bansel, Ex. Engineer-in-chief, H.P. P.W.D.
8. Banks : Rural indebtedness in H.P.
9. Tourism : Development of Tourism in H.P.
10. State Income : State Income, its growth in H.P. & comparison of P.C.I. with other states, Sh.R.S. Bhatnagar-Director Eco & Statistics, H.P.
11. Public Finance : Economic classification of H.P. Budget Sh. A.B. Lal Srivastva, Resarch officer, Eco. & Statistics Deptt.
12. Information Published in Giri Raj.

B. Reference Books

1. Gazzettier of Lahaul Spiti, Kinnaur & Chamba.
2. Seventh Five year plan-planning Deptt. H.P.
3. Annual Budget (1982-83) Planning Deptt. of H.P.
4. Economics Reviews of H.P. (1981-1991) Director of Eco. and Statistics H.P.
5. Statistical outline of H.P. (1978 onwards) Director of Eco. and Statistics H.P.
6. Statistical Abstracts of H.P.
7. Distt. Statistical. Abstracts of all disticts Director of Eco. and Statistics H.P.
8. Important statistics of H.P.
9. Socio-Economic survey of H.P.
10. Geography of H.P.
11. Rivers of H.P.
12. Forests of H.P.

LIST OF PICTURES AND DIAGRAMS

1. Transport : Skyline Rope-way-in Remote Forests
2. Electricity : Electricity consumption Diagram

3. Tourism : 1. Buddhist temple.
4. State Income : State Income of H.P.—bar—diagram per capital Income—Bar—diagram.
5. Budget : Over all Budget
Tax Revenue
Expenditure of rev. Acctt. Bar Diagram.
6. Agriculture : Food Grains Production Diagram, Fruit Production, Apple Grading, Hopes Production.

राष्ट्रीय गान

जन-गन-मन अधिनायक जय हे,
 भारत भाग्य विधाता।
 पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा,
 द्राविड़, उत्कल बंग।
 विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
 उच्छल जलधि तरंग।
 तब शुभ नामे जागे,
 तब शुभ आशिष मागे।
 गाहे तब जय गाथा।
 जन-गण-मंगल दायक जय हे,
 भारत भाग्य विधाता।
 जय हे, जय हे, जय हे,
 जय जय जय जय हे।